Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

उच्चमध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का समायोजन क्षमता पर शिक्षकों तथा विद्यालय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. अमित कुमार शर्मा* एकता सिंधु**

* असिस्टेट प्रोफेसर, एशियन इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, इम्फाल (मणिपुर) भारत
** शोधार्थी (शिक्षा) एशियन इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, इम्फाल (मणिपुर) भारत

शोध सारांश – समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई छात्र अपने विद्यालय, समाज तथा अपनी कक्षा में सामंजस्य पूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। उसी के कारण छात्र का सम्पूर्ण मानसिक एवं व्यक्तित्व का विकास सम्भव हो पाता है। यदि छात्र अपने वातावरण में समायोजन नहीं कर पाता तो उसका विकास बाधित हो जाता है। समायोजन से छात्रों का आत्मविश्वास बढता है वर्तमान शोध में मुजफ्फरनगर जनपद के ग्रामीण छात्रा में माध्यमिक स्तर के छात्रों से एक प्रपत्र प्रश्न द्वारा उनके शिक्षकों के बारे में जानकारी प्राप्त की गई। यही जानकारी छात्र को विद्यालय के वातावरण में समायोजित करने को प्रभावित करती है। प्रश्न प्रपत्र के द्वारा छात्रों से अध्यापक को पढाने की रूचि कुशलता, इच्छा, परीक्षा मूल्यांकन में ईमानदारी, शिक्षक द्वारा गृहकार्य समझाना, शिक्षा द्वारा पाठयक्रम भी उपयोगिता, अपनी शिक्षण क्षमता में सुधार तथा विद्यालय प्रबन्धन के सहयोग में सम्बन्धित प्रश्न पूछे गये थे। छात्रों को प्रत्येक प्रश्न में दो विकल्प दिये गये थे। भिन्न भिन्न छात्रों ने दोनों में से एक विकल्प का उत्तर दिया। इन आंकडों को सभी विद्यालयों से एकत्र कर परिणाम ज्ञात किया। साख्यिंकी विशलेषण द्वारा ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों के दोनों समूहो में कोई सह सम्बन्ध नही पाया गया। सबके अपने स्वतन्त्र विचार थे।

शब्द कुंजी – अध्यापक आंकलन सह, सम्बन्ध, समायोजन, विद्यालय छात्र, प्रश्न प्रपत्र।

प्रस्तावना – भारत में स्वतंत्रता से पूर्व शिक्षा की व्यवस्था पूर्ण रूप से व्यवस्थित नहीं थी। स्वतंत्रता के वाद सरकार द्वारा विभिन्न स्तर के विद्यालयों को चालू किया गया। पहले अधिकतर लोग शिक्षा पर ध्यान न देकर अपने व्यवस्याय में लगे रहते थे। जनसंख्या वृद्धि के साथ शिक्षा पद्धति तथा शिक्षण तकनीकों में भी धीरे-धीरे सुधार होता गया तथा समाज एवं सरकार के प्रयासों से पढने वालों की संख्या में वृहित होने लगी। आधुनिक समय में शिक्षकों के प्रशिक्षण पर भी ध्यान दिया जा रहा है। इसके लिए सरकार समर्थित तथा व्यक्तिगत विद्यालयों की स्थापना में भी निरन्तर वृद्धि हो रही है।

विश्व की आधुनिक स्थिति के अनुसार इस समय शिक्षा में कई अन्य परिर्वतनों की भी आवश्यकता अनुभव की जा रही है। जिससे भावी नागरिकों को शिक्षित एवं प्रशिक्षित करके उन्हें योग्य बनाया जा सके। वैसे तो उत्तम विद्यार्थी प्रारम्भिक शिक्षा में सुधार से तैयार किये जा सकते है। परन्तु उच्च माध्यमिक स्तर भी शिक्षा का विशेष महत्व होता है। क्योकि इस अवस्था में छात्र स्वयं के निर्णय लेने में सक्षम होने लगता है। अत: इस स्तर पर शिक्षकों का दायित्व तथा महत्व भी बढ जाता है। इन सबके उपरान्त भी भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति उत्साह कम ही देखा जा रहा है। साथ ही सुविधाओ के आभाव के कारण शिक्षक भी पूर्ण रूचि तथा इच्छा के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में शिक्षण करने से कतराते है। इससे छात्रों की समायोजन क्षमता प्रभावित होती है तथा उनमें आत्म-सम्मान की कमी रह जाती है। वर्तमान शौध में जनपद मुजफ्फर नगर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों से 100 छात्रों का चयन कर उनसे शिक्षकों के बारे में प्रश्न प्रपत्र द्वारा जानकारी एकत्र की गई तथा उसका विश्लेषण किया गया है।

सामग्री एवं विधि– विद्यालय में छात्रों के समायोजन का अध्ययन करने के लिए जनपद मुजफ्फर नगर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय से कक्षा 12 में से 10-10 छात्रों का चयन कर उनसे विद्यालय के शिक्षकों के बारे में जानकारी प्राप्त की गई थी। इसमें छात्रों ने अपनी इच्छानुसार बिना किसी दबाव के अध्यापकों के बारे में अपने विचार व्यक्त किये। प्रश्न प्रपत्र के प्रत्येक प्रश्न के दो रखे गये थे। छात्रों को किसी एक विकल्प में चुनना था। अत: में सभी विशलयों के छात्रों को अलग अलग जोडा लिया गया था जिन्होंने प्रथम या द्वितीय विकल्प चुना था।

दोनों विकल्पों के कुल छात्रों का सांख्यिाकी द्वारा आपस में सहसम्बन्ध तथा टी (+) गुणांक ज्ञात किया गया।

जिन विद्यालयों से आकडें एकतत्र किये गये वे निम्न प्रकार थे।

1. आदर्श जनता इण्टर कॉलेज, रसूलपुर
2. ऐन्जिस इण्टर कॉलेज, जिला मन्सूरपुर
3. कुंद कुंद जैन इण्टर कॉलेज, खतौली
4. राजवंश विद्या मंदिर इण्टर कॉलेज, मुजफ्फर नगर
5. श्री देवी मंदिर इण्टर कॉलेज, खतौली
6. चौ0 तिलक राम इण्टर कॉलेज, खतौली
7. पिकेट इण्टर कॉलेज, खतौली
8. स्प्रिंगडेल पब्लिक स्कूल, मन्सूरपुर

प्रत्येक विद्यालय से 10-10 छात्र कक्षा 12 से चुने गये। परन्तु चौ0 तिलकराम इंटर कॉलेज तथा पिकेट इंटर कॉलेज से 20-20 छात्र लिये गये

थे। उनमें 10 छात्र विज्ञान विषय के तथा 10 छात्र कामर्स/कला विषय के थे। चुने गये 100 छात्रों में विज्ञान के 40 कला तथा कामर्स के 30-30 छात्र थे। इनमें छात्राओं की संख्या 65 तथा छात्र 35 थे। प्रश्न प्रपत्र भरने के लिए कोई निर्देश या दबाव नहीं दिया गया था तथा ही विद्यालय को उनके उत्तर के बारे में बताया गया था। प्रश्न प्रपत्र में मुख्य प्रश्न शिक्षकों द्वारा कितना कोर्स पढाया गया, शिक्षक की पढाने की इच्छा एवं कुशलता उत्तरपुस्तिका मूल्यांकन में ईमानदारी, गृहकार्य समझाना, प्रतियोगी परिक्षाओं तथा विषय की उपयोगिता बताना, विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान, खेलकूद भ्रमण तथा अन्या प्रतियोगिताओं का आयोजन करना प्रश्न सम्मिलित थे। छात्रोंको संख्या को एक एक अंक मान कर परिणाम एवं विश्लेषण सारिणीबद्ध किया गया।

प्रश्न प्रपत्र में कुल 16 प्रश्न पूछे गये थे। प्रत्येक प्रश्न के दो विकल्प में से एक को चुनना था। सभी विद्यालय के प्रथम व द्वितीय विकल्प चुनने वाले छात्रों का योग कर प्रश्न संख्या के सामने अंकित किया गया था। वाद में सांख्याकी विद्धि से सहसम्बन्ध तथा टी (+) गुणांक ज्ञात किया गया।

पूछे गये प्रश्न एवं विकल्प-

1. अध्यापक द्वारा कक्षाओं में कितना कोर्स पढाया गया।

विकल्प -1 80-100 प्रतिशत 2. 60-80 प्रतिशत

2. कक्षा में शिक्षक कितनी तैयारी से आते है।

विकल्प-1 पूर्ण2. संतोष जनक

3. शिक्षक छात्र को कक्षा में समझाने का कितना प्रयास करते है।

विकल्प- 1. पूर्णतया 2. संतोषजनक

4. शिक्षक की पढाने के प्रति इच्छा

विकल्प- 1. अछिक2. अच्छी

5. उत्तर पुस्तिका परीक्षण में शिक्षक की ईमानदारी।

विकल्प- 1. सदैस अच्छी 2. संतोषजनक

6. शिक्षक द्वारा दिये गये गृहकार्य को समझाना

विकल्प- 1. हरबार 2. कभी कभी

7. विद्यालय द्वारा छात्रों को प्रमण पर ले जाना

विकल्प- 1. समय समय पर 2. कभी कभी

8. विद्यालय द्वारा छात्रों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास का प्रयास

विकल्प-1. अच्छी प्रकार 2. सामान्य रूप से

9. शिक्षकों द्वारा छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं तथा पाठ्यक्रम के नाम बताना

विकल्प-1. सदैव 2. कभी कभी

10. छात्रों को उदाहरण देकर पाठ्य क्रम की उपयोगिता बताना

विकल्प-1. हमेशा 2. कभी कभी

11. शिक्षकों द्वारा अपनी शिक्षण कमियों को सुधारने का प्रयास

विकल्प- 1. सदैव 2. कभी कभी

12. विद्यालय प्रबन्धन द्वारा छात्रों की योगता बढाने का प्रयास

विकल्प 1 हॉ 2. कभी कभी

13. शिक्षकों द्वारा छात्रों की समस्या का समाधान

विकल्प 1. अधिकांश 2. बहुतकम

14. शिक्षकों तथा विद्यालय द्वारा छात्रों को नौकरी पाने में मदद करना

विकल्प 1. सदैव 2. कभी कभी

15. शिक्षकों द्वारा श्यामपट के अलावा शिक्षण में अल्पसाधनों का प्रयोग

विकल्प - 1. 50-60 प्रतिशत 2. 50 प्रतिशत से कम

16. शिक्षकों द्वारा छात्रों को अन्य क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना

विकल्प 1. सदैव 2. कभी कभी

सारिणी: अध्यापक आंकलन प्रपत्र में छात्रों प्रपत्र की संख्या में सह सम्बन्ध-

			विचलन		विचलन का वर्ग		
सं.	समूह 1X	समूह 2Y	X^1	Y^1	X^2	Y^2	X^1Y^1
1	62	38	9.2	-9.4	88.36	88.36	-86.48
2	65	35	12.2	-11.4	148.84	129.96	-139.08
3	59	41	6.2	-6.4	38.44	40.96	-39.68
4	65	35	12.2	-12.4	148.84	153.76	-151.28
5	61	39	8.2	-8.4	67.24	70.56	-68.88
6	59	41	6.2	-6.4	38.44	40.96	-39.68
7	57	43	4.2	-4.4	17.64	19.36	-18.48
8	47	53	-5.8	5.6	33.64	31.36	-49.88
9	45	55	-7.8	7.6	60.84	57.76	-59.28
10	56	44	0.2	-3.4	0.04	11.56	-0.68
11	43	57	-9.8	9.6	96.04	92.16	-94.08
12	45	55	-7.8	7.6	60.84	57.76	-59.28
13	46	54	-8.8	6.6	77.44	63.56	-58.08
14	46	55	-8.8	6.6	77.44	43.56	-58.08
15	38	62	-14.8	14.6	219.04	213.16	-216.08
16	48	52	-4.8	4.6	17.64	21.16	-220.08
योग	842	758	127	130	1190.46	115.56	1196.16

X' = प्रथम समूह का औसतांक से विचलन

Y' = द्वितीय समूह का औसतांक से विचलन

सरिणी में 1-16 तक के प्रश्नों के उत्तर जिन छात्रों ने प्रथम एवं द्वितीय विकल्प में दिये है। उन्हें समूह -1 व समूह-2 में रखकर योग किया गया। इस प्रकार दोनों समूहों में सह सम्बन्ध ज्ञात किया जिसका मान -1.63 पाया गया। अर्थात दोनों समूहों के छात्रों ने अपने स्वतंत्र विचार व्यक्त किये है। वे एक दूसरे से प्रभावित नहीं है।

टी (+) गुणांक का मान 0.45 पाया गया जबकि इसका सारिणी मुल्य 0.05 स्तर पर 1.7 तथा 0.01 स्तर पर 2.35 है। शौध से स्पष्ट हो गया कि छात्रों के समायोजन में शिक्षकों तथा विद्यालय प्रबन्धन की विशेष भूमिका होती है। जब तक शिक्षक-छात्र में समाजस्य स्थापित नहीं होगा तब तक छात्रों की समायोजन क्षमता विकसित नहीं होगी तथा न ही उनमें आत्मविश्वास की वृद्धि हो पायेगी। अत: छात्रों को शिक्षण के अतिरिक्त भी किसी न किसी रूप में शिक्षकों के सम्पर्क में रहना अनिवार्य होता है। इसके लिए शिक्षक एवंविद्यालय प्रबन्धक को कार्यक्रम बनाकर छात्रों के पूर्ण विकास पर ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक है।

इस प्रकार के प्रयास शिक्षा क्षेत्र में प्रारम्भ से ही शोधकर्ताओं के द्वारा किये जाते रहे है। जिनमें विद्यार्थियों की रूचि के साथ अन्य विषयों पर भी शौध प्रस्तुत किये है। पासो तथा शर्मा (2010), खरे (1998), सिन्हा (1978), पाडेय व तिवार (1978), जंग बहादुर (2003), जेकव तथा

लेफग्रीन (2003), सिंह व राकेश कुमार (2011), होपकिन्स (2010), अकबरी तथा साहिब जादा (2020), सिंह (2016), चौथानी (2014)

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. पासी तथा शर्मा (2010), माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षण दक्षता का अध्ययन। भारतीय आधुनिक शिक्षा।
2. कंचन खरे (1996), प्रतापगढ जनपद के सनातक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक निष्पान्ति पर सामाजिक आर्थिकसतर के प्रभाव का अध्ययन। प्रकाशित लघु एम0 डी0 लघुशैध प्रबन्धक, पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौन पुर।
3. सिन्हा जे0 सी0 (1978), परिवार की ईकाई के रूप में उसकी भूमिका का उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की व्यवसयिक रूचि पर प्रभाव। थर्ड सर्वे ऑफ ऐजुकेशनल रिसर्च (11), पी0 एचट डी0 शिक्षा शास्त्र, कोलक्ता, विश्वविद्यालय।
4. पाडे व तिवारी (1978), विद्यार्थियों की रूचि, अभिवृति एवं शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक व आर्थिक सह- सम्बन्ध। स्वतंत्र अध्ययन, एन0 सी0 आर0 टी0, नई दिल्ली।
5. जंग बहादुर (2003), ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के शिक्षकों की बुद्धि का उनकी शिक्षण अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन। बीरबहादुर पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
6. जंकब वीव ओ0 तथा लेफ ग्रीन एल (2003), द इम्पैक्ट आफ टीचर ट्रनिंग आन स्टुडैन्ट अचीवमैंट। ऐक्सपैरिमैंट अवार्डस फ्राम स्कूल रिफार्म इफैक्ट इन शिकागो।
7. सिंह आर0 के (2011), माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकाक्षा, समायोजन क्षमता एवं रूचि का सजनशीलता के परिपेक्ष में अध्ययन। पी0 एच0 डी0 शिक्षाशास्त्र, राममनोहर लोहिया विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
8. हापकिन्स जे0 (2010), इफैक्टिवनैस आफ इटरेक्शन एनालाइसिस,आबजर्वेशन सिस्टम टुवर्डस मेडिफिकेशन आफ टीचर्स बिहेवियर। जर्नल आफ ऐजुकेशन, टैक्नोलोजी।
9. अकबरी ओ0 तथा सहिवजादा, जे0 (2020), स्टुडैन्ट्स सैल्फ काफीडैंस एण्ड ईट्स इफैक्ट आन देयर लर्निंग प्रोसैस। अमेरिकन इंटरनेशनल जर्नल आफ सोशल साईस रिसर्च।
10. सिंह आर (2016), स्ट्रैस अमंग सकूल गोईग एउोलसैल्स इनर रिलेशन द साईकोलोजीकल हार्डजैस। जर्नल आफ ऐहजुकेशनल साईकोलॉजी 9(4), 8-15
11. चौपानी, के (2014), स्टडी आफ ऐकेडैमिक स्ट्रैस एण्ड एडजस्टमैंट अमंग गुजराती एण्ड इंगलिश मिडियम सकूल सटुडैन्टस। जर्नल आफ इन्ज्यिन साईकोलाजी, 2(1), 86-93

****